



આસમાન
મી હંદા

નવીન સાગર

नवीन सागर आसमान भी दंग



चित्रकन : कैरन हेडाक

मूल्य : 8.00

प्रथम ससरारण : 1989

क्रति स्वामित्व : नवीन सागर

प्रकाशक : संभावना प्रकाशन

रेवती कुंज, हापुड़ - 245101

मुद्रक : शकुन प्रिंटर्स, दिल्ली - 32

सारे बच्चों के लिए



माँ का गीत / 5
दादा जी / 6
तारे / 8
सावन का गीत / 9
गिरा पानी गिरा पानी / 10
टालूराम / 12
तुम हो कौन मैं हूँ कौन ! / 14
भोलू का सपना / 16
लौट के बुद्धू / 18
बैठे वे दम साध / 19
गोटे साँई की पतंग / २०
बगीचा फैला मीठू का / 22
खेल / 24
बिल्ली तक न आती / 26
तुम भी आना / 27
दोस्त / 28

माँ का गीत

सो जा ओ सो जा रे।
उधर न आए नींद अगर तो
इधर गोद में आ रे।

पंछी लौट बसेरा सोये
आसमान में तारे
सोये पेड़ पत्तियाँ सोयीं
फूल सो गये सारे
ऊँघ रहीं बत्तियाँ
पड़े हैं जहाँ-तहाँ अँधियारे
नींद कहीं से बुला रही है आ रे! आ रे! आ रे!

सो जा ओ सो जा रे !
उधर न आए नींद अगर तो
इधर गोद में आ रे !





दादा जी

दादा जी नाराज़ हैं।
रोज़ रहा करते हैं वे क्या आज हैं !

पता नहीं चल पाता है कि वे किससे नाराज़ हैं
बच्चों से नाराज़ हैं कि बूढ़ों से नाराज़ हैं
चतुरों से नाराज़ हैं कि मूढ़ों से नाराज़ हैं
कचरों से नाराज़ हैं कि कूड़ों से नाराज़ हैं
चोटी से नाराज़ हैं कि जूड़ों से नाराज़ हैं
दादा जी नाराज़ है।
रोज़ रहा करते हैं वे क्या आज हैं !

दादा जी नाराज़ नहीं।
उन्हें हुआ है क्या यह कोई राज नहीं

गुससुम हैं अपने कमरे में
उन्हें बुलाये जो ऐसी आवाज़ नहीं।
गुज़र जये उनकी दुनिया के मेले ठेले
दादी नहीं नहीं तब से हैं और अकेले।
कहाँ चले ऐ बच्चो उनको साथ लो
अपनी नरम हथेली में अब उनका हाथ लो
ले जाओ उन बगीचों के फूलों में
अपने साथ झुलाओ उनको झूलों में
फिर देखो लड्डू की चोरी करने में
साथ तुम्हारे वे भी चल फँस सकते हैं
हंसते हो जिस तरह
उस तरह वे अब भी हँस सकते हैं।
चूको मत वे कल न रहेंगे आज हैं
भूल जाओ कि दादा जी नाराज़ हैं।



तारे

ऊपर आसमान है
उसमें तारे हैं
चमकदार हैं तारे कितने सारे हैं।

बहुत दूर धरती सूरज से बड़े-बड़े
दिखते हैं यों एक जगह पर खड़े-खड़े
पर हैं भी या नहीं कौन कह सकता है !
तारा ना हो पर प्रकाश रह सकता है
तारे से वह चला करोड़ों वर्ष हुए
इसी बीच तारा मिट गया किसी कारण
बहुत दूर से आने में लग गया समय
चला तेज सबसे प्रकाश लेकिन उसको
चले हुए अविराम करोड़ों वर्ष हुए।

तारा उगार मिटा तो तारा कहाँ गया !
धरती सूरज चाँद और सारे तारों को
जाना होगा कभी-न-कभी वहाँ गया
जहाँ गया वह
वहाँ बदल कर रूप
नये रूपों में ढलता हुआ
सदा है कहाँ गया !



सावन का गीत

सावन का झूला इस बार
इतना बड़ा डालना
जिसमें समा जाए संसार।

उस डाली पर
जो फैली है आसमान के पार
उस रस्सी का
कोई न जिसका पारावार
एक पेंग में मंगल ग्रह के द्वार
और दूसरा में
इकदम से अंतरिक्ष के पार।



गिरा पानी गिरा पानी

अरे ! गिरने को है पानी !
नंगे निकल पड़े गलियों में
करने शैतानी।

बूँदें गिरीं
अंधेर छाया बिजली चमकानी
इतनी ठंडी हवा सिहर के
नानी चिल्लानी
बुलाओ बच्चों को भीतर
गिरेगा जोरों का पानी
ना मानी बच्चों ने
दौड़े उसकी ना मानी
बादल काले घने घुमड़ते
उमड़े अवदानी
झमाझम पूरी बस्ती पर
गिरा पानी ! गिरा पानी !



लहर गलियों में लहरानी
कमर तक डूब गए नंगे
तैरने में अब आसानी
तैरते चले गए नाके
वहाँ से घंटाघर आ के
सड़क की बड़ी नदी में बड़े
जहाँ आधे तक डूबे खड़े
साँड़ गुस्से में अभिमानी !

वहाँ से मुड़े घरों की ओर
अँधेरा फैल गया घनघोर
द्वार पर खड़ी-खड़ी नानी
नाम ले-ले के चिल्लानी
किनारे लगे हुए बच्चे डरे कि मारेगी नानी
मगर वह गुस्से में बोली
साथ मुझको भी ले जाते
कहा भोलू ने बूढ़ी हो
तुनक के नानी बरसानी
अगर रस्ते में थक जाती
तैर के वापस आ जाती।

रात भर
बादल करते रहे साथ धरती के मनमानी।
गिरा पानी ! गिरा पानी !



टालूराम

करना है दस दिन में काम
हाँ ! हाँ !
बोले टालूराम।

हमने कहा समझ लो काम
बोले कभी समझ लेंगे
हमने कहा करोगे कब
बो जब चाहोगे तब
पर पहले समझोगे तो !
बोले तभी समझ लेंगे !

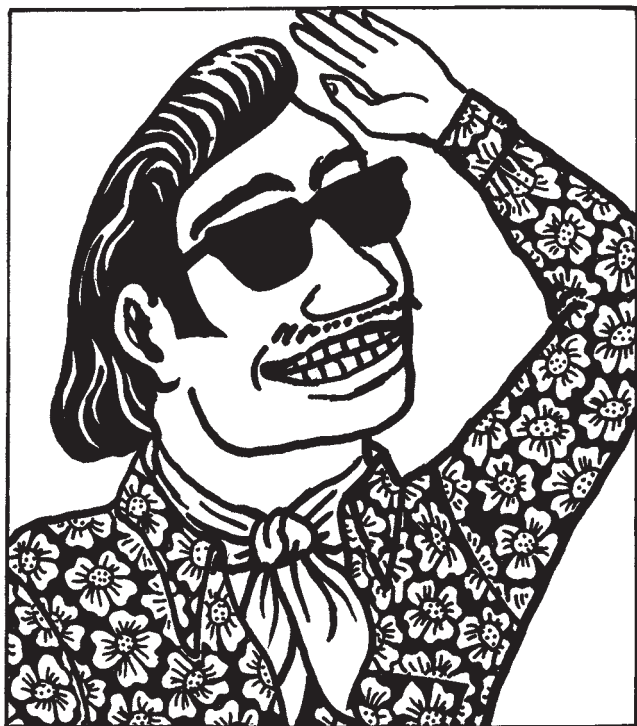
जैसे-तैसे समझा काम
दसवें दिन हम उनका नाम
पूछ-पूछ के मार तमाम
लौटे जब थक कर के शाम
घर के आगे टालूराम
बोले भैया जै जै राम !



हमने कहा हो गया काम ?
फौरन बोले कैसा काम !
हमने कहा अरे वो काम
बोले अच्छा-अच्छा वो
भूल रहा हूँ क्या था काम !
हमने याद दिलाया काम
बोले दिल से टालूराम
कर देंगे हाँ कर देंगे ।

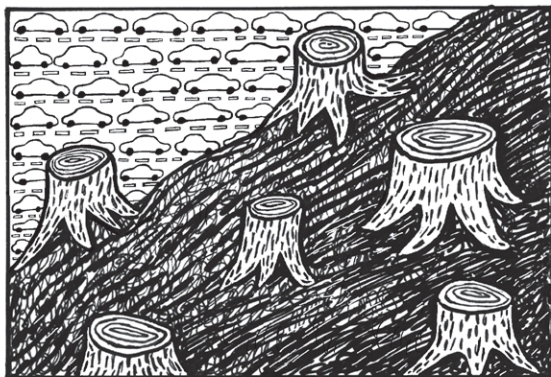
फिर से दस दिन गुज़र गये
गुज़र गये दस दिन फिर से
हम गुस्से में भरे हुए
उनके आगे खड़े हुए
हमने कहा हो गया काम !
बोले दस दिन तो हो लें
हमने कहा हो चुके हैं
बोले अभी और होंगे
और हँस पड़े टालूराम

उनने जाने कितने काम
इसी तरह से किये तमाम !



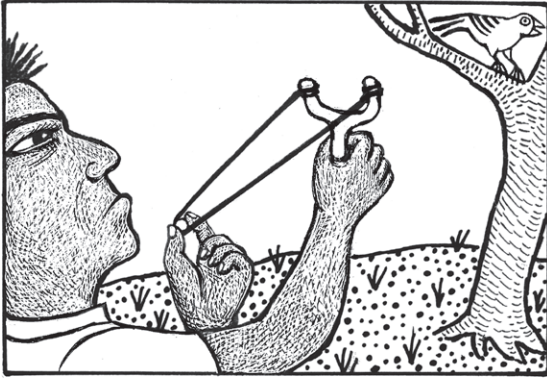
तुम हो कौन ! मैं हूँ कौन !

तुमने काटे पेड़ समूचा जंगल काटा
भरी धूप में छीना अपनी माँ का छाता
मैंने अपने घर के आगे पेड़ लगाया
पेड़ लगाया
बोलो ! बोलो ! तुम हो कौन ! मैं हूँ कौन !



तुमने फूल सूँघ के फेंका
बोले अगर गधा सा रेंका
मैंने स्वर संगीत बनाया
खूब सुनाया
बोलो ! बोलो ! तुम हो कौन ! मैं हूँ कौन !





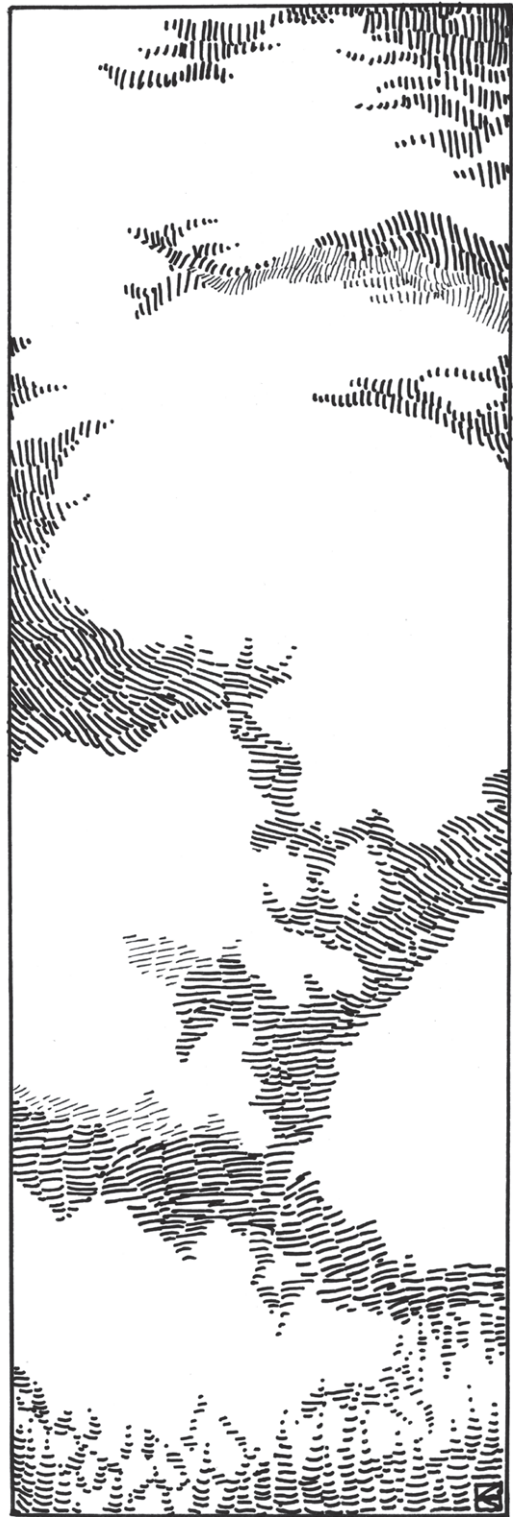
तुमने उड़ती चिड़िया मारी
 कुछ भी ना कर पाई बिचारी
 मैंने उसके बच्चों का घोंसला बनाया
 खूब सजाया
 बोलो ! बोलो ! तुम हो कौन ! मैं हूँ कौन !



तुमने गाली देना सीखा
 उसको गाली जो भी दीखा
 मैंने अपना खुला खुला घरबार बसाया
 सबै बुलाया
 बोलो ! बोलो ! तुम हो कौन ! मैं हूँ कौन !

भोलू का सपना

भोलू ने सपना देखा
सपने में सपना देखा
आसमान की खुली सड़क पर
देखा घर अपना देखा।
घर है पर दीवार नहीं
कहीं कोई आधार नहीं
खिड़की द्वार किवाड़ नहीं
कोना कोई आड़ नहीं।



घर में बहुत उजाला है
बाहर है आलोक बहुत
घर में है लोगों की भीड़
बाहर भी हैं लोग बहुत
बादल के फाहों जैसे
हैं गोया ना-हों जैसे
भोलू घर के भीतर हैं
समझ नहीं पा रहे मगर वे
किस फाहे के भीतर हैं
ढूँढ़ रहे हैं फाहों में
भोलू खुद को घर में बाहर
आसमान की राहों में

नीचे तभी दिखी धरती
भोलू कूद पेड़ नीचे
गिरते ही सपना टूटा
पड़े रहे आँखें मीचे।



लौट के बुद्धू

उसने नहीं नहाया
घर वालों के डर से आया
और घाट पर बैठा-बैठा
रहा देखता
नदी में किल्लोल मुहल्ले भर की
पानी लेकिन उसे नहीं छू पाया।

कड़ी धूप थी खूब पसीना आया
वह उठ घर को धाया
मिला राह में खचा कीच का
उससे बच आगे बढ़ने को
बहुत सँभल के उसने पैर बढ़ाया
तभी पसीना आँखों में घुस आया
गया हड़बड़ा गिरा कीच के बीच
बुरा लिथड़ाया।

अब क्या करता
लौट नदी को आया
रोते-रोते हाय ! नहाया
इतने आँसू गिरे पूत के
पूर नदी में आया।





बैठे वे दम साध

भोलू टी वि से नाराज।
उस कमरे में गए तक नहीं आज।

आँखें टेस्ट करा के लौटे
बूढ़ों सी कमज़ोर
कानों में है दर्द
भरा है विज्ञापन का शोर
कान सफाई करने वाला बोला
भोलूराम ! इसे निकालें कैसे
यह तो भीतर तक घनघोर।

पापा जी रिजल्ट लाये हैं
गुस्से में आये हैं
भोलू छुपे हुए बैठे हैं
खुद से शरमाये हैं
अम्माँ ढूँढ रही हैं उनको
बैठे वे दम साध।

गोटे साँई की पतंग

गोटे साँई की पतंग
नीले पीले लाल हरीरे
बरन बरन के रंग।

बुला रही है उड़ती उड़ती
जिसने देखा ऊपर
उसकी आँख उसी से जुड़ती
मुड़ती इधर
उधर को मुड़ती
ऊँचा ताने सिर इकदम से सीधी ऊपर
हौले-हौले गोल घूम कर
रुकती-झुकती
तिरछी होकर तेज़ भागने वाली
मतवाली की लीला देख निराली
आसमान
हाँ ! आसमान भी दंग ।



उड़ते पंछी से बतयाती
टकरानी सी लगती बच पर जाती
जाती दूर-दूर इठलाती
दूर कहीं खो जाती
साँझ ढले वह धुंध लपेटे
बुला रहे घरती के बेटे
वापस आती-आती
अपने पीछे चाँद उगाती
आसमान भर में तारे बिखराती।

ठुकी किल दीवार बीच जो
उस पर टँगे-टँगे सोने का
उसका अपना ढंग।
गोटे साँई की पतंग।



बगीचा फैला मीठू का

बगीचा देखा मीठू का
अरे ! बस ऐसा मीठू का !
नहीं एक भी पेड़ घास भी नहीं
फूल पात है मगर खास भी नहीं।

कैसे नहीं ?
वहाँ वो देखो फूल रहे
और वहाँ वो पत्ते हाथी के कानों से झूल रहे
नन्हें नन्हें पौधे कितने सारे
उनके पीछे पुष्प धवल उजयारे
और वहाँ वो भौरा
और वहाँ वो तितली
और वहाँ चिड़िया मचान से फिसली
सधी बेल पर आ के
भगी गिलहरी नज़र बचा के
अभी-अभी जिस अमलतास पर ····· ।



कहाँ ? कहाँ ?

किस अमलतास पर !

अरे ! वहाँ अमलतास पर

जो मीठू के सपने में

आया और गया

मीठू की केवल पलक झपकने में

एक-एक जड़ में पत्ती में धरती मिट्टी में

बगीचा फैला मीठू का

बोलो अब बोलो बगीचा कैसा मीठू का !

पकड़ कर कान रहा मैं मान

नहीं है वैसा मीठू का

कि समझा जैसा मीठू का।



खेल

चलो चलें खेलेंगे
जो भी मिला राह में अपनी
साथ उसे ले लेंगे।

क्या खेलेंगे ! हमें क्या पता
जो सूझा खेलेंगे।

सूरज हुआ अगर ऊपर तो
पेड़ों में छुप कर के
उसे चुनौती देंगे छू लो
किरनें दौड़ा कर के
किरनें जैसे ही छूने को
आसमान से उतरें
गिलहरियाँ दौड़ें पेड़ों पर
आती किरनें कुतरें
भाग खड़ी होंगी ऊपर को



आएँगीं फिर नीचे
गिलहरियों से बच
पत्तों से छन के नीचे-नीचे
घुस जाँँगे तुरत
पेड़ की कोटर में हम सारे
धीरे-धीरे बुझ जाँँगे
सूरज के अंगारे
चली जाँँगीं किरनें
हँसती हुई खीझ के मारे
चाँद खिलेगा छिटक जाँँगे
तारे तारे तारे
सो जाँँगे हम घर जाकर
खिड़की पास उधारे।

हम समझेंगे खेल खतम है
लेकिन किरनें आकर
सुबह हमें छू लेंगी
सूरज
हमें दिखेगा हँसता ऊपर
ताली बजा-बजा कर।



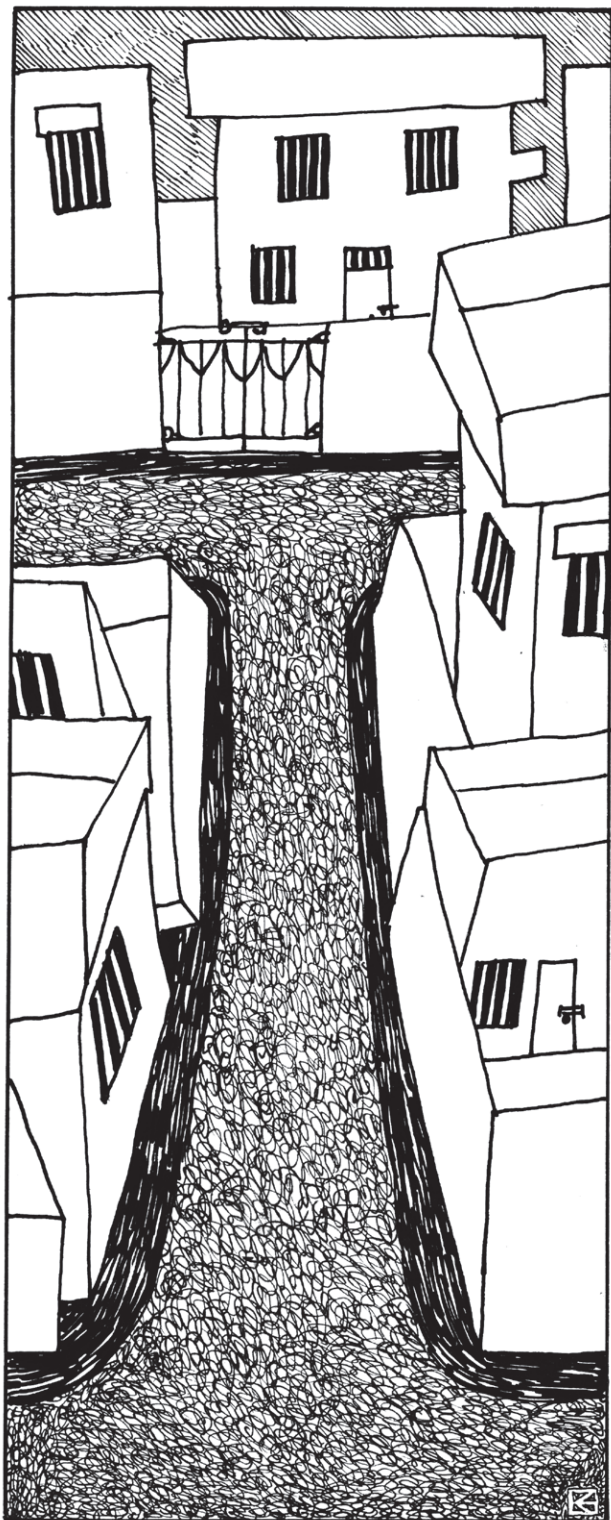
बिल्ली तक न आती

अम्माँ खेले कहाँ बताओ !
गालियाँ सूनी द्वार बंद हैं
जिधर जहाँ भी जाओ।

मिले न कोई संगी साथी
दिखे न घोड़ा हाथी
कैसी बस्ती शाम हुई पर
हुई दिया ना बानी
आसमान सूना
पतंग सीलन में दीमक खाती
जालीदार बना दी खिड़की
बिल्ली तक ना आती।

पापा जी गुमसुम बैठे हैं
बंद किये हैं द्वार
दादा दादी चाचा चाची
आँगन बुआ डाल पर झूला
सुआ कबूतर चिड़िया रानी
फूल पत्तियाँ बहता पानी
यह पूरा संसार
कहाँ है अम्माँ कहाँ बताओ !

गलियों सूनी द्वार बंद हैं
जिधर जहाँ भी जाओ।





तुम भी आना

नदी चढ़ी है आना।
तुम भी आना तुम भी आना
आना तुम भी आना।
आए बादल घने उतर के
उनसे हाथ छुआना
हवा गा रही तुम भी गाना
गाने में खो जाना।
नदी किनारे गोद धरा की हरा मखमली बाना
वहीं पेड़ पूरे पर छाया
एक घोंसला
सब चिड़ियों ने मेहमानों के लिए बनाया
उसमें जा सो जाना।
रात लोरियाँ नदी गाएगी
पंख पसारे परी आएगी
सुबह गाएगी चिड़िया रानी तुम्हें जगाने गाना।

दोस्त

डगमग करते मुन्ने निकले
पहुँचे टुन्ने के घर टुन्ने हरसे
दोनों पहुँचे छून्ने के घर
छून्ने निकले घर से
घुन्ने मिले बीच रस्ते
भरे इमलियाँ बस्ते में
देख गुरुजी को चारों
भागे कहत नमस्ते।
आगे जा के मुन्ने गिर गए
दुकानदार के खस्ते में
भगदड़ मच गई रस्ते में
मुन्ने टुन्ने छून्ने घुन्ने
घुस गई चारों बस्ते में।

